नवरात्रि व्रत कथा (Navratri Vrat Katha)

नवरात्रि व्रत की कथा हिंदू धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह कथा देवी दुर्गा के नौ रूपों की महिमा, उनके पराक्रम, और भक्तों के प्रति उनकी कृपा का वर्णन करती है। यहाँ नवरात्रि व्रत की पूरी कथा प्रस्तुत है:

नवरात्रि व्रत की शुरुआत

प्राचीन समय की बात है, एक राजा और रानी थे, जो बहुत ही धार्मिक और न्यायप्रिय थे। उनके राज्य में सुख-शांति थी, लेकिन उनके जीवन में एक ही कमी थी - उनके कोई संतान नहीं थी। राजा और रानी ने संतान प्राप्ति के लिए अनेक व्रत और तप किए, लेकिन सफलता नहीं मिली।

एक दिन राजा ने अपने गुरु से इस बारे में मार्गदर्शन मांगा। गुरु ने राजा को मां दुर्गा की उपासना और नवरात्रि व्रत करने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि यह व्रत मां दुर्गा को प्रसन्न करने और उनकी कृपा प्राप्त करने का सबसे सरल और पवित्र तरीका है।

मां दुर्गा का आह्वान

राजा और रानी ने अपने राज्य में नवरात्रि व्रत का आयोजन किया। नौ दिनों तक उन्होंने पूरी श्रद्धा और नियम से व्रत रखा। वे सुबह जल्दी उठकर स्नान करते, मां दुर्गा के चित्र के सामने दीप प्रज्वलित करते, और दुर्गा सप्तशती का पाठ करते। उन्होंने नौ कन्याओं को भोजन कराया और उन्हें सम्मानपूर्वक विदा किया।

नौवें दिन की रात को, मां दुर्गा ने राजा और रानी को स्वप्न में दर्शन दिए। मां ने कहा, "तुमने पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ मेरा व्रत किया है। मैं तुमसे प्रसन्न हूं। जल्द ही तुम्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी, जो अत्यंत धर्मात्मा और पराक्रमी होगा।"

मां दुर्गा ने राजा को यह भी बताया कि नवरात्रि व्रत का पालन करने से जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आती है। यह व्रत भक्तों के पापों का नाश करता है और उन्हें आत्मिक शुद्धि प्रदान करता है।

उन्होंने कहा, "जो भी भक्त सच्चे मन से इस व्रत का पालन करेगा और मेरी पूजा करेगा, मैं उसके सभी कष्ट हर लूंगी और उसे हर क्षेत्र में सफलता प्रदान करूंगी।